29/05/2020

Pedagogy of Commerce
Topic - Lecture method

B.Ed.
Ist year

## (a) व्याख्यान विधि (Lecture method) ⇒

यह शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है यह आदर्शवादी विचारधारा की देन है। शिक्षा मे वैज्ञानिक प्रवृत्ति के फलस्वरूप इसका अर्थ अधिक व्यापक हो गया है। इसे शिक्षण की प्रभुत्ववादी शिक्षण आव्यूह मानते है क्योंकि इसके द्वारा अधिगम के विशिष्ट उद्देश्यो की प्राप्ति की जाती है। सामाजिक विषयो के शिक्षण मे इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है।

**स्वरूप ⇒** इसमे पाठ्य वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है। शिक्षण को अधिक क्रियाशील रहना पडता है। शिक्षक को अधिक तैयारी करनी पडती है। छात्र केवल श्रोता के रूप मे कार्य करते है।

Scanned with CamScanner

## (भाषण) विधी के प्रयोग मे सावधानिया =>

(1)

(1) योग्य शिक्षको को ही व्याख्यान विधी का अनुसरण करना चाहिये।
(2) शिक्षको को बालको के मानसिक स्तर एवं रूचियो को ध्यान रखना चाहिये। उदाहरण उनके स्तर तथा जीवन से सम्बन्धित होना चाहिये।
(3) व्याख्यान की भाषा सरल तथा बोधगम्य होनी चाहिये। व्याख्यान की गति अति तीव्र होनी चाहिये।
(4) व्याख्यान के समय विकासात्मक प्रश्न भी पूछे जाने चाहिये, जिससे बालको का ध्यान केन्द्रित हो सके।
(5) व्याख्यान मे कक्षा का वातावरण नीरस तथा गम्भीर हो जाता है, इसलिये बीच-बीच मे हास्य-विनोद का भी समावेश होना चाहिये।

## * व्याख्यान (भाषण) विधी के गुण =>

(1) भाषण विधी ज्ञान प्रदान करने की सबसे सरल विधी है
(2) भाषण विधी के द्वारा जटिल शिक्षण सामग्री को भी सरलता से प्रस्तुत किया जा सकता है
(3) भाषण विधी के द्वारा छात्रो मे सहनशीलता का विकास किया जा सकता है।
(4) नवीन विषय की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के लिये उत्तम पद्धति है

## * व्याख्यान (भाषण) विधी के दोष =>

(1) भाषण विधी मे केवल शिक्षक सक्रिय रहता है व छात्र निष्क्रिय होता है (2) इस विधी के द्वारा विद्यार्थीयो मे क्रियात्मक पक्ष का विकास नही किया जाता है
(3) यह पद्धति अमनोवैज्ञानिक है। इसमे व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान मे नही रखते तथा बालको की अभिरूचियो व क्षमताओ का विकास नही हो पाता।

Scanned with CamScanner